'खंड-खंड अग्नि' के परिप्रेक्ष्य में अग्नि-परीक्षा की प्रासंगिकता

डॉ. उर्मिला पोरवाल सेठिया
बैंगलोर
urmiporwal@gmail.com

काव्य-नाट्य, नाटक और काव्य की एक मिली-जुली विधा है। इसमें काव्य और नाटक दोनों के तत्वों का समन्वय रहता है। हिंदी में इस विधा को गीति-काव्य, काव्य-नाटक, दृश्य-काव्य आदि कई नामों से पुकारा जाता है। आज काव्य भी छन्द मुक्त होकर नाटक के समीप आ गया है। डॉ. दशरथ ओझा इसे 'गीति-नाट्य' गीति-रूपक, 'काव्य-रूपक, संगीत रूपक, 'गीति-नाटक के पर्याय के रूप में प्रयुक्त करते हैं। सर्वाधिक उपयुक्त नाम काव्य नाटक ही प्रतीत होता है। टी. एस. इलियट, वैष्ठ एच. क्लार्क, जे. इसाक. जी. फ्रीडले, सी. इसल. एच. सी. बार्कर आदि ने काव्य-नाटक विधा को "Poetic Drama" कहा है। भारत-भूषण का 'अग्निलीक' प्रकाश दीक्षित का 'टयु' धर्मवीर भारती का 'अंधा-युग' काव्य-नाटक ही है। इसी श्रृंखला में- सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से पुरस्कृत रचनाकार प्रो. दिविक रमेश के 'खंड-खंड अग्नि' *(Format:Paper Back,ISBN:81-7055-352-0 मूल्य:रु100/)* काव्य-नाटक उल्लेखनीय है। इसी काव्य-नाटक के आधार पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अग्नि परीक्षा की प्रासंगिकता शोधालेख प्रस्तुत है।

इस काव्य-नाटक की विशेषताओं पर कई समीक्षाएं हुई है परन्तु स्वयं दिविक रमेश से एक भेंटवार्ता में डॉ. लालित्य ललित, डॉ. देवशंकर नवीन एवं डॉ. जसबीर त्यागी एवं सुश्री अलका सिन्हा के द्वारा पूछा गया कि मानसिक शांति किस रचना से मिलती है? दिविक रमेश ने उत्तर देते हुए कहा कि-हर रचना से ही मिलती है यदि वह रचना है। 'खंड-खंड अग्नि' काव्य-नाटक से विशेष रूप से मिली। दो वर्ष के लंबे अंतराल पर वह लिखा गया था। आज भी जब कभी परेशान होता हूँ तो उसे पढ़ता हूँ। हालांकि मंचित नहीं हो सका है पर सराहना और आत्मीयता खूब मिली है। एम.ए. स्तर के पाठ्यक्रम में भी प्रवेश मिला।

यह काव्य नाटक रामायण के एक प्रसंग पर आधारित है- 'सीता की अग्निपरीक्षा' कथावस्तु पर दृष्टिपात करें तो रामायण महाकाव्य में सीता अग्निपरीक्षा एक विवादित प्रसंग के रूप में जाना जाता है। इस

प्रसंग के अनुसार राम द्वारा रावण को युद्ध में हराने के पश्चात लंका में सीता को स्वीकार करने से पहले सीता की अग्नि परीक्षा ली। अग्नि में प्रवेश करने के पश्चात भी सीता का शरीर भस्म नहीं हुआ। इससे सीता की पवित्रता सिद्ध हुई और श्रीराम द्वारा सीता को पवित्र जानकार स्वीकार कर लिया गया।

ऐतिहासिक और धार्मिक ग्रंथों में प्रसंग कुछ इस प्रकार देखने को मिलता है-लंका पर विजय हासिल करने के बाद सीता राम के सम्मुख लायी जाती हैं। उस समय राम ने सीता के चरित्र पर सन्देह करते हुए जो बातें की हैं वह किसी मर्यादा पुरुषोत्तम की नहीं बल्कि एक पुरुष प्रधान समाज के औसत पुरुष का कथन ही जान पड़ता है। राम के सन्देह का सबसे प्रमुख कारण है सीता का शारीरिक सौन्दर्य। राम कहते हैं- 'सीते ! तुम जैसी दिव्य रूप सौन्दर्य से सुशोभित मनोरम नारी को अपने घर में स्थित देखकर रावण चिरकाल तक तुमसे दूर रहने का कष्ट नहीं सह सका होगा। यानी सीता का सौन्दर्य ही उनका सबसे बड़ा शत्रु बन गया। पूरे एक सर्ग मे राम यह समझाते हैं कि सीता देवि, यह युद्ध मैंने आपको प्राप्त करने के लिए नहीं बल्कि आपके अपहरण से मेरे महान कुल पर जो धब्बा लग गया था उसे दूर करने के लिए किया और अपने पराक्रम से जीता है। ध्यान रहे कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम ये सारी बातें सीता से अकेले में नहीं बल्कि भरी सभा में कह रहे हैं। ऐसा लगता है कि राम भरी महफिल में सीता को अपमानित कर रहे हैं।

रावण की मृत्यु के बाद सीता जिस उम्मीद से राम के सम्मुख आयी थीं या बुलायी गयी थीं स्थिति उसके एकदम उलट थी। थोड़ी ही देर पहले लंका पर राम का आधिपत्य स्थापित होने के बाद हनुमान राम का सन्देश लेकर पहुँचते हैं और सीता से कहते हैं-'श्री राम ने आपको यह सन्देश दिया है- देवि मैंने तुम्हारे उद्धार के लिए जो प्रतिज्ञा की थी, उसके लिए निद्रा त्यागकर अथक प्रयत्न किया और समुद्र में पुल बाँध कर रावण बध के द्वारा उस प्रतिज्ञा को पूर्ण किया। यह सन्देश मिलने के बाद सीता जब सामने आती हैं तो राम का व्यवहार देखने लायक है।

वे सीता के चरित्र पर सवाल उठाते हैं 'तुम्हारे चरित्र में संदेह का अवसर उपस्थित है; फिर भी तुम मेरे सामने खड़ी हो। जैसे आँख के रोगी को दीपक की ज्योति नहीं सुहाती उसी प्रकार आज तुम मुझे अत्यन्त अप्रिय जान पड़ती हो। राम का तर्क यह है कि कौन ऐसा कुलीन पुरुष होगा जो तेजस्वी होकर भी दूसरे के घर में रही स्त्री को मन से भी ग्रहण कर सकेगा। इसलिए राम सीता से साफ शब्दों में कहते हैं- 'अत: जनक कुमारी ! तुम्हारी जहाँ इच्छा हो चली जाओ। मैं अपनी ओर से तुम्हें अनुमति देता हूँ। भद्रे, ये दशों दिशाएँ तुम्हारे लिए खुली हैं। अब तुमसे मेरा कोई प्रयोजन नहीं है। यह कहने के बाद राम उन्हें विकल्प भी सुझा देते हैं। भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, वानर राज सुग्रीव अथवा राक्षस राज विभीषण जहाँ तुम्हें सुख मिले जा सकती हो। यहाँ राम सीता के चरित्र पर सन्देह करते ही हैं इस सन्देह के दायरे में भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, सुग्रीव और विभीषण सब आ जाते हैं। भय में, पराजय में, लाभ में और हानि में समभाव रखने वाले राम का यह विचलन अचम्भित करने वाला है।

यही प्रसंग अन्य ग्रन्थो में भी अवलोकनीय है। अब महाभारत के राम का भी थोड़ा जायजा ले लिया जाय। लंका विजय के बाद सीता जब सामने आती हैं तो राम कहते हैं- 'विदेह कुमारी! मैने तुम्हें रावण की कैद से छुड़ा दिया अब तुम जाओ मेरा जो कर्तव्य था, उसे मैंने पूरा कर दिया। इसके बाद राम सारी हद पार कर देते हैं। वे कहते हैं-

सुवृत्तामसुवृत्तां वाप्यहं त्वामध मैथिलि। नोत्सहे परिभोगाय उवावलीढ़ं हविर्यथा।।

अर्थात 'मिथिलेश ननिदनी! तुम्हारा आचार-विचार शुद्ध रह गया हो अथवा अशुद्ध अब मैं तुम्हें अपने प्रयोग में नहीं ला सकता, ठीक उसी तरह जैसे कुत्ते के चाटे हुए हविष्य को कोई भी ग्रहण नही करता है।

क्या सीता राम के लिए हवन सामग्री हैं? यदि ऐसा है तो वह कौन सा यज्ञ है जिसके लिए सीता महज हवन सामग्री हैं और जूठी हो जाने पर सर्वथा अनुपयुक्त हो जाती हैं। स्त्री के बारे में राम के ऐसे संकीर्ण विचारों को उदधृत किया जाय तो अपने आप में एक पूरा ग्रंथ तैयार हो जाय।

स्वयंभू के पउमचरिउ में राम कहते है कि "नदी की तरह कुटिल महिला का कौन विश्वास कर सकता है, भले ही दुष्टा महिला मर जाय, पर वह देखती किसी को है और ध्यान करती है किसी दूसरे को। उसके मन में जहर होता है, शब्दों में अमृत और दृष्टि में यम होता है, स्त्री के चरित्र को कौन जानता है, वह महानदी की तरह दोनों कूलों को खोद डालती है। चन्द्रकला के समान सबपर टेढ़ी नजर रखती है, दोष ग्रहण करती है, स्वयं कलंकिनी होती है, नयी बिजली की तरह वह चंचल होती है, गोरस मन्थन की तरह कालिमा से स्नेह करती है, सेठों के समान कपट और मान रखती है, अटवी के समान आशंकाओं से भरी हुई होती है, निधि के समान वह प्रयत्नों से संरक्षणीय है, गुड़ और घी की खीर की भाँति वह किसी को भी देने योग्य नहीं है।

'जगज्जननी सीता के बारे में इतने कुत्सित विचारों के वजूद राम हमारे समाज में मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में माने और पूजे जाते हैं। इसी से अन्दाज लग सकता है कि हमारे समाज में स्त्री की स्थिति कितनी नीचे गिरी हुई है। सीता बार-बार कहती हैं कि 'जो मेरे अधीन है वह मेरा हृदय सदा आप में ही लगा रहता है (उस पर दूसरा कोई अधिकार नहीं कर सकता) परन्तु मेरे अंग तो पराधीन थे। उनका यदि दूसरे से स्पर्श हो गया तो मैं विवश अबला क्या कर सकती हूँ। वे बार-बार कहती हैं कि रावण के शरीर से मेरे शरीर का स्पर्श हो गया इसमें मेरी विवशता ही रही है। मैंने स्वेच्छा से ऐसा नहीं किया था। अपनी ही जीवन संगिनी की इस विवशता को राम किसी तरह से समझने को तैयार नहीं हैं। वे न केवल सीता को बल्कि समूची स्त्री जाति को सन्देह की नजर से देखते हैं।

इस पर सीता की टिप्पणी देखने लायक है – 'पृथकस्त्रीणां प्रचारेण जातिं त्वं परिशकुसे'

अर्थात 'नीच श्रेणी की स्त्रियों का आचरण देखकर यदि आप समूची स्त्री जाति पर सन्देह करते हैं तो यह उचित नहीं है। वंचित तबके के लिए एक व्यक्ति या सदस्य की गलती को पूरे वर्ग के चरित्र लक्षण के रूप में

देखना या निरूपित करना प्रभावशाली समूहों की आम प्रवृत्ति है। यहाँ राम का आचरण इसी तरह का है। सीता की नजर में राम की यह प्रवृत्ति ओछे मनुष्य की प्रवृत्ति है। वे कहती हैं- 'नृपश्रेष्ठ! आपने ओछे मनुष्य की भाँति केवल रोष का ही अनुसरण करके मेरे शील स्वभाव का विचार छोड़ कर केवल निम्न कोटि की स्त्रियों के स्वभाव को ही अपने सामने रखा है। राम को ओछा मनुष्य कहने का यह साहस सीता के व्यक्तित्व के एक अलग ही रूप को प्रकाशित करता है। आम तौर पर जिससे हमारा परिचय नहीं है।

सीता यह कहती हैं कि यदि मुझे त्यागना ही था तो यह बात आपने तभी कहला दी होती जब आपने हनुमान को मेरा हाल जानने के लिए भेजा था। मैं उसी समय अपना प्राण त्याग देती और आपको और आपके साथियों को युद्ध का यह श्रम नहीं करना पड़ता। फिर इस प्रकार अपने जीवन को संकट में डालकर आपको यह युद्ध आदि का व्यर्थ का परिश्रम नहीं करना पड़ता तथा आपके ये मित्र लोग भी अकारण कष्ट नहीं उठाते। सीता इतनी सरलता से उस महायुद्ध की व्यर्थता की ओर इशारा करती हैं जो राम के पौरुष, प्रभुत्व और पराक्रम की महागाथा है। वे राम के पराक्रम और पुरुष अहं दोनो की हवा निकाल देती हैं। पर अहं तो अहं है। सीता को अग्नि परीक्षा तो देनी ही होगी।

इस पूरे प्रसंग में राम ने जैसे अपना विवेक ही खो दिया है। वाल्मीकि कहते हैं- उस समय श्री रघुनाथ जी प्रलयकालीन संहारकारी यमराज के समान लोगों के मन में भय उत्पन्न कर रहे थे। उनका कोई भी मित्र उन्हें समझाने उनसे कुछ कहने अथवा उनकी ओर देखने का साहस न कर सका। सीता अपनी सचाई को प्रमाणित करने के लिए लक्ष्मण से चिता सजाने के लिए कहती हैं। न चाहते हुए भी राम का इशारा पाकर लक्ष्मण चिता तैयार करते हैं। देखते-देखते सीता सबके सामने आग में प्रवेश कर जाती हैं। यधपि यहाँ सीता अग्निपरीक्षा में सफल होती हैं और साक्षात अग्निदेवता उन्हें लेकर प्रकट होते हैं। अग्निदेव से सीता का चरित्र प्रमाण पत्र पाकर राम आश्वस्त होते हैं। थोड़ी देर पहले तक क्रोध में अन्धे होकर विवेक शून्य बातें करने वाले राम यहाँ तक कह डालते हैं कि मुझे अच्छी तरह मालूम है कि सीता प्रज्वलित अग्निशिखा के समान दुर्धर्ष तथा दूसरों के लिए अलभ्य हैं। दुष्टात्मा रावण मन के द्वारा भी इनके उपर अत्याचार करने में समर्थ नहीं हो सकता था। प्रश्न उठता है कि जब सीता की तेजस्विता के बारे में राम को इतना अखण्ड विश्वास था फिर अग्निपरीक्षा लेने की जरूरत क्या थी ? राम स्वयं कहते हैं कि सीता रावण के घर में रही थी इसलिए परीक्षा के बगैर उनके साथ रहने पर लोग मुझे कामी और मूर्ख समझ लेते। राम एक और तर्क देते हैं। मैं तो सीता के चरित्र के प्रति पहले ही आश्वस्त था लेकिन मैं चाहता था कि सीता की शुद्धता के बारे में त्रैलोक्य को पता चल जाये, इसलिए उन्हें अग्निपरीक्षा से गुजरना पड़ा। अग्निपरीक्षा से सीता के चरित्र के बारे में त्रैलोक्य कितना आश्वस्त हुआ और स्वयं राम किस हद तक आश्वस्त हुए इसकी चर्चा विस्तार की मांग करता हैं।

थोड़ी देर रुककर अग्निपरीक्षा के सामाजिक सन्देश पर विचार कर लें। मेरी जानकारी में स्त्री को अपनी शुचिता प्रमाणित करने के लिए अग्निपरीक्षा देने की यह पहली घटना है। इससे राम भक्तों के इस देश में त्रैलोक्य को स्त्री की शुचिता की परीक्षा लेने और पुरुष वर्चस्व को स्थापित करने का एक बड़ा हथियार मिल गया। जब जगज्जननी सीता अग्निपरीक्षा से गुजर सकती हैं तो फिर साधारण स्त्रियाँ क्यों नहीं।

अग्निपरीक्षा से सीता तो बच गइ पर इस दृष्टान्त की वेदी पर करोड़ों स्त्रियाँ अग्नि और अग्निपरीक्षा के हवाले होती रही हैं। हमारे समाज ने स्त्री की शुचिता को नापने का अदभुत पैमाना विकसित कर लिया और राम की उदात्त कथा शताब्दियों से इस पैमाने को वैधता प्रदान करती आ रही है।

रामायण और महाभारत भारतीय मन को निर्मित और नियंत्रित करने के स्रोत रहे हैं। पराक्रम, त्याग, नीति, कौशल आदि राम के ऐसे गुण हैं जिनके लिए भारतीय मानस में बेइन्तहा सम्मान है। मर्यादा पुरुषोत्तम होने के योग्य शायद ही कोई दूसरा चरित्र हो। स्त्री सम्बन्धी कोई आदर्श स्थापित हो तो राम की पत्नी सीता से ज्यादा उपयुक्त और कौन होगा ? इसलिए परिवर्तन के प्रत्येक दौर में इन महाकाव्यों को आधार बनाकर अपने विचारों और मान्यताओं को व्यक्त करने की कोशिशें हुई हैं। स्त्री-पुरुष सम्बन्धों को निरूपित करने की दृष्टि से भी इन दोनों महाकाव्यों का काफी उपयोग हुआ है। इस नजरिये से देखें तो सीता के चरित्र का सर्वाधिक उपयोग हुआ है। रामायण काल में अग्नि परीक्षा का उल्लेख मिलने के कारण अग्नि परीक्षा" एक मुहावरा नहीं बल्कि ऐसी परीक्षा बन गयी है जो उन महिलाओं के लिए जीवन-मरण का प्रश्न बन जाता है। जिन्हें स्वयं को पवित्र, साबित करने के लिये देना पड़ता है। पुराने धार्मिक दृष्टांतों का उदाहरण देकर समाज के दबंगो द्वारा, कभी परिजनों द्वारा उसे अग्नि से गुजरने को जबरदस्ती मजबूर कर दिया जाता है तो कभी उन्हें आग से किसी प्रकार का नुकसान न होने की गारंटी दी जाती है पर ऐसी गारंटी भी सिर्फ जबानी व बेमतलब होती है।

अग्नि-परीक्षा का यह प्रसंग अब तक अनेक धार्मिक फिल्मों व टी.वी. सीरियलों में भी दिखाया जा चुका है, जिसमें सीता अग्नि से बिना किसी नुकसान के बाहर निकल आयी थी। अग्नि-परीक्षा की परंपरा तो आज भी नारी की पवित्रता की परीक्षा के नाम पर जारी है। किसी महिला के चरित्र पर दोष लगाने वाले तत्व समाज में आज भी मौजूद हैं पर अग्नि-परीक्षा के बाद कोई महिला या तो जिंदा निकल नहीं पाती अथवा गंभीर रूप से जलकर अस्पतालों में दम तोड़ देती है।

पिछले जून माह में मध्यप्रदेश के धार जिले के भीलाखेड़ी गांव के एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी रेखाबाई की अग्नि-परीक्षा ले डाली। उसने पहले तो अपनी पत्नी को यह विश्वास दिलाया कि वह पवित्र है अग्नि-परीक्षा में उसका बाल भी बांका नहीं होगा तथा उसने आग पर बैठने के लिए तैयार करने के लिए अपनी पत्नी को रामायण सहित अनेक उदाहरण दिये तथा अंतत: आग पर बैठा दिया। नतीजा यह हुआ कि बुरी तरह जली हुई उस महिला को धार के भोज अस्पताल में भरती करना पड़ा।

ऐसा ही मामला गुजरात के राजकोट के पास सुरेन्द्र नगर जिले से आया - जब एक महिला को अपनी निर्दोषिता की परीक्षा देने के लिए उबलते तेल में हाथ डालना पड़ा। इस मामले की पुलिस में रिपोर्ट भी दर्ज हुई। राजस्थान के पाली में एक व्यक्ति चुन्नीलाल ने अपनी पत्नी को आग में बैठने को तो नहीं कहा पर उसने उसे अंगारों पर चलने के लिए मजबूर किया ताकि यह साबित हो सके कि उसमें कोई खोट नहीं है, परिणाम स्वरूप उसके पैर व शरीर का निचला हिस्सा झुलस गया।

कुछ वर्ष पूर्व पहले की घटना है रायपुर के पास ग्राम बेन्द्री से हमारे पास एक खबर आयी कि ग्रामीणों को कुछ महिलाओं के कार्य कलापों पर संदेह है तथा वे किसी बैगा की सलाह से उनकी परीक्षा लेने वाले है। जिसमें उन्हें स्वयं को निर्दोष साबित करने के लिए आग के घेरे से गुजरना पड़ेगा। जो महिला आग के घेरे को पार कर लेगी वह परीक्षा में सफल मानी जावेगी। अग्नि-परीक्षा की सारी तैयारियां हो गई थी, हम तुरंत गांव पहुंचे व ग्रामीणों से घंटो बातचीत के बाद अग्नि-परीक्षा न लेने के लिए समझाया, तब निर्दोष महिलाओं का संकट टला।

इंदौर के पास कंजर समाज में एक महिला को पवित्रता की परीक्षा देने के लिए "खंते का ईमान" (एक प्रकार की अग्नि-परीक्षा) देने को मजबूर किया गया। जिसमें उस महिला को दूध, हल्दी के पानी से नहलाया गया। नई साड़ी पहनायी गयी, कंडो की आग जलायी गयी। लोहे के खंते को लाल गरम किया गया तथा उस महिला को हाथों पर रखकर चलने को मजबूर किया गया।

वैसा ही एक हादसा रतलाम में हुआ जहाँ कंजर समाज के एक अन्य महिला को गर्म तवे को हाथ में रखकर चलने के लिए बाध्य किया गया। इन घटनाओं को देखने के लिए हजारों की भीड़ भी जुटी तथा ये खबर मीडिया में भी आयी, पर इन्हें सामाजिक मामला मानकर किसी ने हस्तक्षेप नहीं किया।

रामायण अग्नि-परीक्षा, नारी जाति की पवित्रता की कसौटी ही नहीं, नारी जाति के सम्मान की भी शौर्य गाथा भी है। यह सन्देश देती है कि अगर एक अत्याचारी परनारी का हरण करता है तो चाहे सागर के ऊपर पुल भी बनाना पड़े, चाहे वर्षों तक जंगलों में भटकना पड़े, चाहे अपनी शक्ति कितनी भी सीमित क्यों न हो। मगर दृढ़ निश्चयी एवं सत्य मार्ग के पथिक नारी जाति के तिरस्कार का, अपमान का प्रतिशोध प्राण हरण कर ही लेते हैं। ऐसी महान गाथा में सीता की अग्नि-परीक्षा जैसा अनमेल, अप्रासंगिक वर्णन प्रक्षिप्त या मिलावटी होने के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं।

सीता की अग्निपरीक्षा के प्रसंग को लेकर अनेक लोगों के भिन्न-भिन्न मत हैं। महिला अधिकारों के नाम पर दुकानदारी करने वाले इसे नारी जाति पर अत्याचार, शोषण, नारी के अपमान के रूप में देखते हैं। विधर्मी मत वाले इस प्रसंग के आधार पर हिन्दू धर्म को नारी शोषक के रूप में चित्रित करते हैं जिससे धर्मान्तरण को समर्थन मिले। अम्बेडकरवादी इसे मनुवाद, ब्राह्मणवाद के प्रतीक के रूप में उछालकर अपनी भड़ास निकालते हैं। जबकि हमारे कुछ भाई इसका श्री राम की महिमा और चमत्कार के रूप में गुणगान करते हैं। क्यूंकि उनके लिए श्री रामचन्द्र जी भगवान के अवतार है और भगवान के लिए कुछ भी संभव है।

इस लेख में सीता की अग्नि-परीक्षा को तर्क की कसौटी पर पक्षपात रहित होकर परीक्षा करने पर ही अंतिम निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है।

तार्किक रूप से देखे तो वाल्मीकि रामायण के श्री रामचन्द्र महान व्यक्तित्व, मर्यादा पुरुषोत्तम, ज्ञानी, वीर, महामानव, ज्येष्ठ-श्रेष्ठ आत्मा, परमात्मा का परम भक्त, धीर-वीर पुरुष, विजय के पश्चात् भी

विनम्रता आदि गुणों से विभूषित, महानायक, सद्गृहस्थ तथा आदर्श महापुरुष थे। ऐसे महान व्यक्तित्व के महान गुणों के समक्ष सीता की अग्नि-परीक्षा कर पवित्रता को निर्धारित करना एक बलात् थोपी गई, आरोपित, मिथ्या एवं अस्वीकार्य घटना प्रतीत होता है। श्रीराम के महान व्यक्तित्व एवं आदर्श विचारों के समक्ष यह प्रसंग अत्यंत तुच्छ है। इससे सिद्ध हुआ कि यह प्रसंग बेमेल है।

साथ ही यह भी विचारणीय है कि वैदिक काल में नारी जाति का स्थान समाज में मध्य काल के समान निकृष्ट नहीं था। वैदिक काल में नारी वेदों की ऋषिकाओं से लेकर गार्गी, मैत्रयी के समान महान विदुषी थी, कैकयी के समान महान क्षत्राणी थी जो राजा दशरथ के साथ युद्ध में पराक्रम दिखाती थी, कौशल्या के समान दैनिक अग्निहोत्री और वेदपाठी थी। सम्पूर्ण रामायण इस तथ्य को सिद्ध करता है कि रावण की अशोक वाटिका में बंदी सीता से रावण शक्तिशाली और समर्थ होते हुए भी सीता की इच्छा के विरुद्ध उसके निकट तक जाने का साहस न कर सका। यह उस काल की सामाजिक मर्यादा एवं नारी जाति की पत्नीव्रता शक्ति का उद्बोधक है। रामायण काल में सामाजिक मर्यादा का एक अन्य उदहारण इस तथ्य से भी मिलता है कि परनारी को अपहरण करने वाला रावण और परपुरुष की इच्छा करने वाली शूर्पनखा को उनके दुराचार के कारण राक्षस कहा गया जबकि सभी प्रलोभनों से विरक्त एवं एक पत्नीव्रत श्रीराम और शूर्पणखा के व्यभिचारी प्रस्ताव को ठुकराने वाले लक्ष्मण जी को देव तुल्य कहा गया है। ऐसे महान समाज में विदुषी एवं तपस्वी सीता का सत्य वचन ही उसकी पवित्रता को सिद्ध करने के लिए पूर्ण था। इस आधार पर भी सीता की अग्नि-परीक्षा एक मनगढ़त प्रसंग सिद्ध होता है।

वैज्ञानिक दृष्टि से भी सोचे तो यह संभव ही नहीं है कि किसी मनुष्य के शरीर को अग्नि के सुपुर्द किया जाये और वह बिना जले सकुशल बच जाये। क्या अग्नि किसी की पवित्रता की परीक्षा लेने में सक्षम है? वैज्ञानिक तर्क के विरुद्ध सीता अग्नि-परीक्षा को चमत्कार की संज्ञा देना मन बहलाने के समान है। केवल आस्था, विश्वास और श्रद्धा रूपी मान्यता से संसार नहीं चलता। किसी भी मान्यता को सत्य एवं ज्ञान से सिद्ध होने पर ही ग्रहण करने योग्य मानना चाहिए। इस आधार पर भी सीता की अग्नि-परीक्षा एक मनगढ़त प्रसंग सिद्ध होता है।

रामायण के एक अन्य प्रसंग को आधार बनाकर देखे तो सुग्रीव की पत्नी रूमा (जिसे बाली ने बंधक बना कर अपने महल में रखा हुआ था) को बाली वध के पश्चात जब सुग्रीव स्वीकार कर सकता है। तो श्रीराम हरण की हुई सीता को क्यों स्वीकार नहीं करते ? श्रीराम को आदर्श मानने वाले इस तर्क का कोई तोड़ नहीं खोज सकते।

सीता के जीवन की दो ऐसी घटनाएँ हैं जो राम के मर्यादा पुरुषोत्तम स्वरूप को भी प्रश्नांकित करती हैं। इसलिए उन्हें नजरन्दाज करने और झुठलाने की कोशिशें भी की जाती रही हैं। खास तौर से दो ऐसे अवसर हैं जब सीता की तेजस्विता, तर्क बुद्धि और विक्षोभ प्रकट होता है। पहली अग्नि-परीक्षा और दूसरा निष्कासन। पराये घर में रह आयी स्त्री को घर में आदर पूर्वक रखना वर्णाश्रमी मर्यादा के बरक्स स्वैराचार को

प्रोत्साहित करता। दूसरी तरफ गर्भवती सीता का बियावन जंगल में निर्वासन राम की दयालुता और करुणा आदि को प्रश्नांकित करता। इस लिए रामचरितमानस में तुलसीदास ने इस प्रसंग की भनक ही नहीं लगने देते हैं सवाल मर्यादा पुरुषोत्तम का है। जनमानस में तुलसीदास और रामचरित मानस को जो स्वीकृतिमिली हुई है उसकी वजह से रामकथा के इस प्रसंग की गंभीरता और अर्थवत्ता प्राय: नजरन्दाज कर दी जाती है। तुलसीदास कहते भी हैं- 'संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने। अपने इसी विवेक से तुलसीदास ने सीता निर्वासन आदि प्रसंगों को छोड़ दिया है।

रामचन्द्र शुक्ल, तुलसीदास की जिस बात पर सबसे ज्यादा रीझते हैं वह है मार्मिक स्थलों की पहचान। मार्मिक स्थलों की यह पहचान तुलसीदास के यहाँ दुतरफा है। कुछ मार्मिक स्थलों को पहचान कर उन्हें पर्याप्त विस्तार देना और कुछ मार्मिक स्थलों को ठीक से पहचान कर (मसलन सीता निर्वासन और शम्बूक बध) छोड़ देना।

नाना पुराण निगम आगम तथा इसके अतिरिक्त भी उपलब्ध स्रोतों को खँगालने के बाद रामकथा लिखने वाले तुलसीदास भी इस प्रसंग को बचा ले गये हैं। रामचरित मानस में जिस सीता का अपहरण होता है वह असली सीता हैं ही नहीं, मर्यादा पुरुषोत्तम राम को पहले से ही मालूम है कि सीता का हरण होगा और उन्हें अपार कष्ट झेलना पड़ेगा। इसलिए वे असली सीता को अग्निदेव की सुरक्षा में दे देते हैं। रावण जिस सीता का हरण करता है वह माया की सीता हैं। अग्नि-परीक्षा में होता सिर्फ यह है कि माया की सीता अग्नि में प्रवेश करती हैं और असली सीता को अगिनदेव वापस लौटा देते हैं। यहाँ अग्नि-परीक्षा का नाटक सिर्फ लोकादर्श स्थापित करने के लिए होता है। इस तरह लोकादर्श भी स्थापित हो गया और सीता को कोई कष्ट भी नहीं हुआ। साप भी मर गया और लाठी भी बच गयी। राम का मर्यादा पुरुषोत्तम वाला रूप भी कायम रह गया। अब जब असली सीता का हरण ही नहीं हुआ तो फिर आगे की कहानी को वैसे भी 'रामराज्य बैठे त्रैलोका हर्षित भए गए सब सोका' पर आकर खत्म हो जाना था।

बहुतेरे ऐसे रामभक्त भी मिल जायेंगे जो सीता निर्वासन के प्रसंग को ही खारिज कर देते हैं। इसके लिए यह तर्क दिया जाता है कि वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त है। राम की छवि को धूमिल करने के लिए किसी ने यह प्रसंग जोड़ दिया है। इसके पक्ष में यह दलील दी जाती है कि यदि उत्तरकाण्ड की कथा प्रामाणिक होती तो महाभारत के रामोपाख्यान में भी इसका उल्लेख होता। इसी पुस्तक में रामायण के प्रक्षिप्त (मिलावट) होने (विशेष रूप से उत्तर कांड) का वर्णन अन्य लेख में किया गया है। उस आधार पर सीता की अग्निपरीक्षा का प्रसंग प्रक्षिप्त होने के कारण अस्वीकार्य है। रामायण की महान गाथा तो युद्ध के पश्चात हनुमान द्वारा राम विजय की सीता को सूचना देने के लिए अशोक वाटिका जाने। श्रीराम द्वारा सीता के पुनर्मिलन और अयोध्या वापिस लौट जाने के साथ समाप्त हो जाती है। रामायण में मिलावट कर श्रीराम के आदर्श चरित्र को दूषित करने एवं सीता कि अग्नि-परीक्षा को व्यर्थ आरोपित करने का कार्य मध्य काल की देन है। इस आधार पर भी सीता की अग्नि-परीक्षा एक मनगढ़त प्रसंग सिद्ध होता है।

प्रामाणिकता और अप्रामाणिकता के प्रसंग में जाने की न तो मेरी योग्यता है और न ही यहाँ इसकी जरुरत है। सिर्फ इतना कहना काफी है कि रामायण के लंका काण्ड में और महाभारत में लंका विजय के बाद और अग्नि-परीक्षा के पहले राम जिस तरह सीता को सार्वजनिक रूप से अपमानित करते हैं- सीता का निष्कासन उसकी स्वभाविक परिणति लगता है। अस्तु, सीता का निर्वासन रामकथा का स्वाभाविक अंग है। इसकी पुष्टि लोक और शास्त्र दोनों ही करते हैं। अब इससे राम की मर्यादा पुरुषोत्तम और सीता की मोम की गुड़िया वाली छवि खंडित होती हो तो हो।

"यह प्रश्न हमेशा उलझा हुआ रहेगा कि कहाँ व्यक्ति की और समूह की विवशता मान ली जाए और कहाँ उसकी कर्मण्यता पर आक्षेप । क्योंकि हर स्थिति में व्यक्ति और समूह का आकलन कुछ ऐसे प्रतिमानों पर होता आ रहा है जिनका आधार या जड़ें अधिकतर निकट या दूर के अतीत में होती हैं। यानी जिनकी समय और स्थान-सापेक्षता एक ऐसे वर्तमान से होती है जो वस्तुत: होता ही नहीं और जो होता है, प्रभुसत्ता का तो सवाल ही नहीं उठता। सम्भवत: आने वाला साहित्य-चिन्तन अतीत के उसी कृशकाय वर्तमान को खोजने का प्रयास किया करता है या करता रहता है। क्योंकि उसके हाथ उस अतीत के एक सशक्त भविष्य की सुविधा भी लग चुकी होती है।"

अंधविश्वास व सामाजिक कुरीतियों के कारण देशभर में प्रतिवर्ष अनेक महिलाओं को विभिन्न कारणों से अग्नि परीक्षा को मजबूर होना पड़ता है। दहेज प्रताड़ना, डायन प्रताड़ना, सती प्रथा के चलते अग्नि दहन मामले इनसे अलग है जिनमें भी अनेक महिलाओं का अग्नि दहन हो जाता है। प्रताड़ना के अनेक मामलों में महिलाएं भी जाने अनजाने प्रतांडित करने वालो की सहभागी बन जाती है। उन पर पारिवारिक दबाव व परम्पराओं के मानने की मजबूरी भी होती है जिसके कारण वे पारिवारिक व सामाजिक स्तर पर विरोध नहीं कर पाती अनेक सर्वेक्षणों में विभिन्न कार्यशालाओं में एक प्रश्न जो अनेक बार विभिन्न मंचों से उठाया जाता है पर उसका जवाब कभी संतोषजनक नहीं मिलता सारी खामियां, सारी कमियां सिर्फ महिलाओं में ही होती है जिसके कारण उसे ऐसी प्रताड़नाओं से दो-चार होना पड़ता है। पुरूष वर्ग क्या पूरी तरह पाक-साफ है। अनेक पुरूषों में भी चारित्रिक दोष समेत अनेक खामियां होती है पर उनके लिए सारी गलतियां माफ है। अपने स्वार्थ के लिए रामायण सहित अन्य धार्मिक ग्रन्थों का मनमाना इस्तेमाल कर महिलाओं को प्रताड़ित करने वालों पर कठोर कार्यवाही हो तथा ऐसी घटनाओं पर रोक लगाने सामाजिक जागरूकता बढ़ाने से संभव होगा।

संदर्भ

1. डॉ विवेक आर्य आलेख।
2. डॉ. दिनेश मिश्र आलेख - March 9, 2012
3. अंधविश्वास के खिलाफ अभियान वेबसाईट।
4. श्री रामचरितमानस तुलसीदास
5. श्रीमद वाल्मीक रामायण
6. पउमचरिउ स्वयंभू
7. महाभारत